© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

भाषाविज्ञान में कोशविज्ञान का महत्त्व

भूपेन्द्र प्रताप सिंह,

शोधच्छात्र संस्कृत विभाग,

इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद

भाषा एवं भाषा तत्त्वों का ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक आधार पर किया गया वैज्ञानिक अध्ययन भाषाविज्ञान कहलाता है। भाषा मानव जीवन की प्राचीनतम उपलब्धि है। भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही भाषा का विश्लेषण होता रहा है, परन्तु भाषाओं का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन आधुनिक युग की देन है। वर्तमान में प्रचलित भाषायाः विज्ञानम्, भाषाविज्ञान, Science of Language, Linguistics अथवा Philology का सम्बन्ध भाषा विषयक विचार एवं अध्ययन से ही है।[1]

भाषाविज्ञान में ध्वनि, पद, वाक्य, रूप, अर्थ तथा कोशविज्ञान आदि का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन उपलब्ध होता है। आधुनिक भाषाविज्ञान का प्रारम्भ सर्वप्रथम सन् 1786 ई0 में सर विलियम जोन्स ने संस्कृत, ग्रीक एवं लैटिन भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन के प्रसंग में किया।[2] सामान्यतः भाषाविज्ञान का शाब्दिक अर्थ 'किसी भाषा का विशिष्ट ज्ञान' होता है। जैसा कि काव्यादर्श में कहा गया कि

इदमन्धतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।।[3]

आधुनिक भाषाविज्ञान में विश्व की सभी भाषाओं के मूल शब्दों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। कहीं–कहीं शब्द और पद में भेद नहीं होता परन्तु संस्कृत भाषा में शब्द और पद में स्पष्ट अन्तर होता है।[4] भाषा विज्ञान के प्रविषय कोशविज्ञान के ही अन्तर्गत शब्दों और पदों के मूल अर्थ, निहितार्थ के सम्यक् ज्ञान का प्रतिपादन किया जाता है।

भाषाविज्ञान के विशिष्ट अंग के रूप में कोशविज्ञान का प्रमुख स्थान है। कोशविज्ञान अर्थात् 'Lexicology' का विषय भाषा के शब्दों का व्यवस्थित रूप से संकलन एवं संग्रहण करना होता है। कोशविज्ञान कोश और विज्ञान शब्दों से बना है। कोश शब्द कुश् (ष्) + घञ्, अच् वा प्रत्यय से व्युत्पन्न हुआ जिसका शाब्दिक अर्थ– पात्र, निधि, भण्डार गृह, संग्रह पात्र आदि होता है। विज्ञान शब्द वि उपसर्ग ज्ञा धातु तथा ल्युट् प्रत्यय के योग से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ विशिष्ट ज्ञान, विशिष्ट प्रज्ञा, विशिष्ट विवेचन होता है। 'इस प्रकार कोशविज्ञान शब्द का अर्थ– अमूल्य, आवश्यक, निधि, पदार्थ, शब्द के विशिष्ट ज्ञान का पात्र, शब्दावली, संग्रह, भण्डारगृह तथा एक स्थान विशेष पर संग्रह होता है।' किसी वस्तु, व्यक्ति, वृक्ष, पशु–पक्षी आदि का नाम अथवा उनके आकार–प्रकार एवं व्यवहार का ज्ञान सामान्य ज्ञान होता है, परन्तु उन्हीं विषयों का सूक्ष्म, विवेकपूर्ण एवं व्यवस्थित मूल ज्ञान उसका विज्ञान होता है।

चूँकि वर्तमान् में इस संसार में अनेक भाषाएँ एवं प्रभाषाएँ तथा बोलियाँ प्रचलित हैं। इन भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों में बहुशः अन्तर है। कोशजनित शब्द के भावार्थ एवं वास्तविक अर्थ में भी पर्याप्त विभिन्नता विद्यमान है। यह सर्वथा असंगत है कि किसी भाषा के प्रत्येक शब्द एवं अर्थ का अन्य भाषा के शब्दार्थ से समान प्रतीति हो। अतः कोशाधारित शब्द के मूल स्वरूप का अर्थबोध हो जाने से ही भाषाविज्ञान की सार्थकता एवं विषमता सिद्ध होती है।

अर्थः वाचः पुष्पफलमाह।[7]

प्राचीन काल से ही भाषा के अनेक रूप एवं व्यवहार का उल्लेख प्राप्त होता है। वर्तमान् समय में समस्त विश्व भाषा एवं विचार के माध्यम से परस्पर अपने ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में नयी ऊँचाइयों को प्राप्त कर रहा है। निजीकरण, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के युग में विकसित व्यवस्था एवं शक्ति सम्पन्नता पाने के लिए एक भाषा–विशेष से जुड़ा व्यक्ति दूसरे भाषा–भाषी से सम्पर्क स्थापित कर रहा है परन्तु भाषा की नैसर्गिक तकनीकी जटिलता एवं विविधता उस भाषा के शब्द का मूल अर्थ या वास्तविक अर्थ प्रकट करने में बाधक बन जाती है।

एक भाषा के शब्द का दूसरी भाषा के शब्द में क्या अर्थ होगा, इसके लिए लगभग सभी भाषाओं में कोशों का संकलन एवं संग्रह प्राप्त होता है। कोशविज्ञान प्रामाणिक ज्ञान का भण्डार है अतः यह सर्वमान्य है कि ''कोशविज्ञान के अन्तर्गत भाषा के उन सामान्य सिद्धान्तों का विवेचन एवं निर्धारण संभव है जिस आधार पर भाषाशब्दकोश बनाये गये अथवा बनाये जा रहे हैं।'' कोशविज्ञान शब्दों एवं पदों की सार्थक निष्पत्ति एवं उनका क्रमागत संग्रहण है।

भारत में भाषाशब्दकोशों का निर्माण वैदिक भाषा के 'निघण्टु' ग्रन्थ से प्रारम्भ होता है। अधिकांश विद्वान भारतीय भाषाकोश का प्रारम्भ 1000 ई0पू0 से मानते हैं[8], जबकि पाश्चात्य भाषाओं में कोशनिर्माण 1000 ई0 सन् तथा अंग्रेजी भाषा में कोशों का निर्माण 16वीं शताब्दी ई0 से प्रारम्भ हुआ है। निरूक्त ग्रन्थ वैदिक संस्कृत भाषा के शब्दों का सटीक निर्वचन तथा उनके संग्रह एवं संकलन का व्यवस्थित ग्रन्थ है।

लौकिक संस्कृत वाङ्मय को सुव्यवस्थित एवं तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक एवं साहित्य सर्जना हेतु प्रयुक्त भाषा के रूप में स्थापित करने का श्रेय महर्षि पाणिनि विरचित संस्कृत व्याकरण ग्रन्थ अष्टाध्यायी था। अष्टाध्यायी भाषा के सौष्ठव एवं वाक्य विन्यास के लिये नियमबद्ध प्रयोग का आदेश है। इसके द्वारा वर्णसमाम्नाय, प्रत्याहार के द्वारा सूत्रविधि के द्वारा शब्दार्थ के विवेचन का उपदेश है। पाणिनि द्वारा व्यवस्थित संस्कृत भाषा के अन्तर्गत अनेक शब्दकोशग्रन्थों का निर्माण हुआ। इन शब्दकोशों का वर्ण्य एवं प्रतिपाद्य विषय एकार्थक एवं अनेकार्थक अर्थात् पर्यायवाची शब्दों का संग्रह ही है। इन कोशसंकलनों में क्रियार्थक शब्दों को छोड़कर संज्ञापदों, अव्ययों तथा विशेषणों से सम्बन्धित शब्दों की सार्थक व्युत्पत्ति एवं संग्रह किया गया है। लौकिक संस्कृत भाषा में कोशविज्ञान का प्रथम संकलन ग्रन्थ तृतीय शताब्दी ई0 में श्रीमद्अमर सिंह द्वारा विरचित अमरकोश नामक कोशग्रन्थ है। यह प्रामाणिक ग्रन्थ नामलिङ्गानुशासन के नाम से रचा गया त्रिकाण्डीय कोशग्रन्थ है। वर्तमान में इस ग्रन्थ की अनेक कोशटीकायें अमरकोश के सरल रूपों में साहित्य जगत् मे उपलब्ध हैं।

निरूक्त वैदिक संस्कृत वाङ्मय में प्रवेश का वह सरल मार्ग है जिस पर बिना कठिनाई के अनुसरण करते हुए क्लिष्टतम् शब्दों की व्युत्पत्ति के बारे में पूर्ण ज्ञान किया जा सकता है। निरूक्तकार ने भारतीय भाषा–विज्ञान को एक नया विषय दिया जो अपनी सत्ता के कारण प्रभावी है। वह विषय शब्दार्थसंज्ञक बोधज्ञान कोशविज्ञान ही है। आचार्य यास्क ने पदों अथवा शब्दों के चार विभागों का उपदेश किया– नाम, आख्यात, उपसर्ग तथा निपात जो वस्तुतः संज्ञाशब्द, क्रियार्थकज्ञान प्रादि अव्यय पद तथा स्वतंत्र अव्यय पद के ही द्योतक हैं।

चत्वारि पदजाजानि नामाख्याते चोपसर्गनिपाताश्च।[9]

महर्षि पाणिनि ने सुबन्त सुप् आदि शब्द और तिङन्त अर्थात् धातु या क्रियाओं से सम्बन्धित शब्दों के दो भेदों का लक्षण किया।

सुप्तिङन्तं पदम्।[10]

शब्द कोशविज्ञान मुख्य प्रतिपाद्य विषय है। शब्द की उत्पत्ति एवं उसका वास्तविक अर्थ जो आमजनमानस के दैनिक भाषा–व्यवहार का नियामक है, कोशविज्ञान के संग्रह द्वारा ही बोधगम्य हो सका। निरूक्त में एकार्थक एवं अनेकार्थक क्लिष्ट एवं संस्कृतनिष्ठ शब्दों का निर्वचन उदधृत है। संस्कृत के प्रमुख उपलब्ध कोशों में अनेकार्थसमुच्चय या शाश्वतकोश, छठी शताब्दी ई0 शाश्वत द्वारा, नाममाला, अनेकार्थमाला, अनेकार्थनिघण्टु– धनåजयकृत, त्रिकाण्डशेष, हारावली, वर्णदेशना– पुरूषोत्तम देव कृत, अभिधानरत्नमाला– हलायुध दशम शताब्दी ई0, विश्व प्रकाश– महेश्वरकृत, नानार्थसंग्रह– अजय पाल कृत। भारतीय संस्कृति कोश, संस्कृत शब्दकोश, मेदिनीकोश, हलायुधकोश, सूक्ति रत्नाकर, सूक्ति सुधाकर आदि हैं।[11]

हिन्दी भाषा में भी कोशविज्ञान के अन्तर्गत हिन्दी शब्दसागर, बृहद्हिन्दीकोश, प्रसादकोश तथा भाषाविज्ञानकोश प्रमुख है।[12] आधुनिक युग में मुद्रण कला की यान्त्रिकी सुविधाओं के द्वारा अनेक कोशों का निर्माण कार्य सरल हो गया हैं वर्तमान् में मनुष्य की भाषाओं के कोशों की रचना बहुतायत है, साथ ही पशु–पक्षियों एवं अन्य विषयों से सम्बन्धित शब्द एवं अर्धकोशों का निर्माण किया जा रहा है।

कोश विज्ञान में भाषाकोश का निर्माण एक भाषीय, द्विभाषीय, बहुभाषीय कोश, साहित्यकोश, पुस्तककोश, व्यक्तिगतकोश, पारिभाषिक शब्दों का कोश, पर्यायकोश (संस्कृत में अमरकोश, अंग्रेजी में Thesaras), सूक्तिकोश, लोकोक्तिकोश, मुहावराकोश, सामान्यज्ञान सम्बन्धी विश्वकोश, कथाकोश, जीवनीकोश आदि अनेक विषयों से सम्बन्धित कोशों का निर्माण किया जा चुका है।

यद्गृहीतमविज्ञातं निगदेनैव शब्द्यते।
अनग्नाविव शुष्कैधो न तज्ज्वलति कर्हचित्।।[13]

भाषाकोश में प्रयुक्त सभी शब्दों का संकलन करना दुष्कर होता है इसमें सभी सन्दर्भों को ध्यान में रखते हुए कोश निर्माण करना चाहिए। कोशों का वैज्ञानिक महत्त्व तभी सिद्ध होगा जब इनके निर्माण में आवश्यक मानकों का प्रयोग हो। कोश की प्रामाणिकता पर प्रश्नचिह्न न लगे इसलिए सम्बन्धित भाषा के मूल शब्दों का संग्रह कर वर्तनी की एकरूपता का ध्यान रखना चाहिए। वर्णानुक्रम के अन्तर्गत शब्दार्थ का स्पष्ट निर्वचन तथा उच्चारण का उल्लेख किया जाना अनिवार्य होता है।

विषयत्वमापन्नैः शब्दैर्नार्थः प्रतीयते।
न सत्तयैव तेऽर्थानामगृहीताः प्रकाशकाः।[14]

कोशविज्ञान में व्युत्पत्ति को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। ETYMOLOGY अर्थात् व्युत्पत्तिशास्त्र संस्कृत भाषा साहित्य में निरूक्त को कहा जाता है। निरूक्त का सम्बन्ध शब्दों के निर्वचन से है। व्युत्पत्तिशास्त्र में शब्दों के मूल अर्थ का उद्घाटन किया जाता है, जो कोशविज्ञान का आधार है। अतः कोशविज्ञान की प्रामाणिकता में शब्दार्थ की व्युत्पत्ति समाहित है, इसलिये यह भाषाविज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण वर्ण्य विषय है।[15] सामान्यतः विश्व के प्राचीन एवं आधुनिक साहित्य में अनेक शब्दों के लिए एक शब्द प्रयुक्त होता है। शब्दार्थ को समानार्थी शब्दों तथा अर्थों के द्वारा सरल एवं स्पष्ट करने के लिए चित्रों का भी प्रयोग किया जाता है। प्रायः कोशविज्ञान के अन्तर्गत शब्दों के मूल अर्थ, स्वरूप एवं क्रम की समस्या प्रकट होती है, जिससे बचने के लिए निश्चित सिद्धान्त पर आधारित कोशों का निर्माण उपयोगी होता है।

बहुष्वेकोभिधानेषु सर्वेष्वेकार्थकारिषु।
यत्प्रयोक्ताऽभिसन्धत्ते शब्दस्तत्रावतिष्ठते।।16

इस प्रकार भाषा के शब्द एवं अर्थ का स्पष्ट मूल स्वरूप, उद्धृत सन्दर्भ साहित्य या ग्रन्थ से पूर्ण परिमार्जित कोशविज्ञान भाषा विज्ञान का प्रमुख अंग है। आधुनिक विश्व साहित्य में कोशविज्ञान का महत्व व्यापक क्षेत्रों, विषयों एवं सन्दर्भों में समाविष्ट है। अतः भाषा शब्दकोश के बिना किसी भी तथ्य का प्रामाणिक ज्ञान संभव नहीं हो सकता है। इसलिए कोशविज्ञान की प्रासंगिकता तथा इसके महत्त्व के विषय में भाषावैज्ञानिकों का सक्रिय योगदान अपेक्षित एवं आवश्यक प्रतीत होता है।

सन्दर्भ सूची

1ण Encyclopedia Britannica.
2ण भाषा विज्ञान, डॉ0 कर्ण सिंह, पृष्ठ सं0–03
3ण काव्यादर्श– 1/4
4ण अष्टाध्यायी– 1/4/16
5ण संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे, पृष्ठ सं0–306
6ण संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे, पृष्ठ सं0–931
7ण निरूक्त– 1/20
8ण भाषा विज्ञान, डॉ0 कर्ण सिंह, पृष्ठ सं0–252
9ण निरूक्त– 1/1
10णअष्टाध्यायी– 1/4/19
11णसंस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर ऋषि, पृष्ठ सं0–601
12णभाषा विज्ञान कोश, डॉ0 भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ सं0–89
13णनिरूक्त– 1/6
14णवाक्पदीय– 1/56
15णभाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र, डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, पृष्ठ सं0–11
16णवाक्पदीय– 2/40